Heart beat= ह्रदय स्पंद

प्रकरण -1

“हम रंग एवं प्रकाश को पसंद करते हैं, स्नेह भी करते हैं। मैं और आप, हर स्थान पर सदैव रंगों की अपेक्षा करते हैं, प्रकाश की अपेक्षा करते हैं। हम में से कोई भी अंधकार को पसंद नहीं करता। एक ऐसा अंधकार जहां कुछ भी ना हो। सब कुछ खाली हो। प्रकाश विहीन वह क्षण, रंग विहीन वह क्षण। अंधकार।

केवल अंधकार।

गहन अंधकार।

जहां हम आँखें खुल्ली रखकर भी कुछ ना देख सकें ....” एक भीड़, जो खुली हुई आँखों के साथ अंधेरे में धीरे धीरे बह रही थी, के कानों पर यह शब्द पड रहे थे।

वह भीड़ समुद्र तल से 14000 फिट ऊंचाई पर हिमालय की किसी अज्ञात चोटी पर अस्थायी रूप से बनाई गई कला दीर्घा के बाहर खड़ी थी, अंदर घुसने की चेष्टा कर रही थी। दीर्घा का द्वार खुल तो चुका था किन्तु चारों तरफ फैले अंधकार में किसी को कुछ भी समज नहीं आ रहा था। केवल वह शब्द उनके कानों तक जा रहे थे।

यह भीड़, जो अंधकार से त्रस्त थी, रंगों से वंचित थी और खालीपन से भरपूर थी, को यह भी ज्ञात नहीं था कि हिम और सूरज साथ मिलकर कैसे कैसे रंगों का सर्जन कर चुके थे।

सूरज अभी पूरी तरह से निकला भी नहीं था, हिम तब भी था।

हिम। श्वेत हिम!

और कोई रंग नहीं। केवल श्वेत रंग छाया हुआ था पहाड़ के कण कण में। जैसे अंधकार को कोई रंग नहीं होता, हिम का भी कोई रंग नहीं था। कहने को तो था श्वेत रंग, किन्तु हिम रंग विहीन था।

सूर्योदय और सूर्यास्त इस पहाड़ी चोटी के लिए दुर्लभ घटनाएँ है। किन्तु उस दिन सूरज निकला था, काले और बड़े बादलों को चीरकर निकला था। सूरज अपनी प्रचंड शक्ति से प्रज़्वलित था। उसकी किरणें गाढ़े श्वेत हिम को पूरी तीव्रता और निष्ठा से प्रताड़ित कर रही थी। किन्तु, हिम जो था, निस्पृह और अप्रभावित।

हिम की बाहरी परत पर कुछ सब कुछ स्थिर था, युगों से खड़े इस पर्वत की भांति।

हिम की परत के नीचे छिपा पानी सदैव प्रतीक्षा में रहता है, हिम के पीघलने की। पानी उत्सुक भी रहता है - हिम की दीवार को तोड़कर बह जाने के लिए। किन्तु हिम की दीवार सशक्त थी अथवा सूरज की किरणें दुर्बल थी, मैं नहीं जानता क्या कारण था, किन्तु सूरज की किरणें हिम की दीवार को तोड़ नहीं पाई, हिम के नीचे छिपे पानी से मिल नहीं पाई।

सूरज की किरणें फिर भी निराश नहीं हुए। हिम को तोड़ने की योजना छोडकर अन्य योजना पर काम करने लगी। किरणें हिम की सतह को स्पर्श करके परावर्तित होने लगी, हवा मे व्याप्त होने लगी। हवा में इंद्रधनुष रच गया। एक, दो, तीन, चार... देखते ही देखते अनेकों इंद्रधनुष रच गए। दायें भी,

बाएँ भी, पूरब में भी, पश्चिम में भी, उत्तर में भी, दक्षिण में भी, ऊपर भी, नीचे भी, दिशाओं में भी और क्षितिज में भी। जहां भी द्रष्टि जा सकती थी वहाँ तक इंद्रधनुष ही दिखाई पड़ते थे।
कुछ क्षण पहले जहां केवल श्वेत रंग ही था, वहाँ रंगों की वर्षा होने लगी थी। दसों दिशाओं में रंग व्याप्त थे। श्वेत हिम अनेक रंगों से भर गया था। श्वेत, हरा, नीला, लाल, नारंगी, पीला, ... जैसे प्रत्येक रंग अपनी अपनी लय में नृत्य कर रहे हो। श्वेत हिम स्वयं ही टूटने लगे, उसने अपना श्वेत रंग त्याग दिया। सूरज के किरणों की योजना सफल हो गई।
ऐसे रंगों से अनभिज्ञ भीड़ अंधकार में बहती हुई उन शब्दों के सहारे आगे बढ़ रही थी। भीड़ उत्सुक थी कला के रंगों को देखने के लिए। वफ़ाई एवं जीत के द्वारा रचे गए चित्रों में इस भीड़ की रुचि थी। भीड़ को जिज्ञासा थी रंगो के आपसी संयोजन को देखने की, रंगों से उभरते हुए द्रश्यों से होने वाली अनुभूति की।
दो सौ से कुछ अधिक व्यक्तियों से बनी इस भीड़ में बड़े बड़े नाम सम्मिलित थे। विश्व के कई प्रसिध्ध चित्रकार, कला के बड़े सौदागर, कला के बड़े माफिया, बड़े उद्योगपति, खेल एवं फिल्मों की बड़ी हस्तियाँ उस भीड़ का भाग थे।
नहीं। भीड़ में सम्मिलित व्यक्तियों की भांति वफ़ाई कोई बड़ी व्यक्ति नहीं थी और ना ही जीत। वफ़ाई और जीत सामान्य व्यक्ति थे। कुछ दिवस तक यह दोनों चित्रकार भी नहीं थे।
कुछ दिवस पहले वफ़ाई एक तसवीरकार थी, किन्तु चित्रकार तो बिलकुल नहीं थी। सन्मान पूर्वक हम उसे तस्वीरी पत्रकार कह सकते हैं, किन्तु वफ़ाई को चित्रकार कहना उचित नहीं होगा।
चित्र प्रदर्शनी का समय प्रत: ग्यारह बजे का था। प्रवेश द्वार पर रखी घड़ी जब 10.52 मिनिट का समय बता रही थी, अभी भी आठ मिनिट का समय शेष था, तब भीड़ अपना धैर्य खो रही थी। प्रतीक्षा कर रही भीड़ अधीर हो गई।
पूरी भीड़ अधीर थी अथवा भीड़ का कुछ हिस्सा अधीर था? बात तो एक ही है। भीड़ को अधीर कौन बनाता है? एक एक व्यक्ति, जो भीड़ का हिस्सा होता है, भीड़ को अधीर बना देता है, दिशा विहीन बना देता है।
भीड़ सदैव अधीर होती है, दिशा विहीन होती है, विचित्र होती है। जब कोई व्यक्ति भीड़ से अलग होता है तब वह मनुष्य की भांति अभिव्यक्त होता है। किन्तु जैसे ही वह भीड़ के अंदर पिघल जाता है, ना जाने उसे क्या हो जाता है, वह अपना व्यक्तित्व खो देता है। यह कैसी विडम्बना है?
सभी आमंत्रित गण्य मान्य व्यक्ति अपना अपना धैर्य खोने लगे। वह सब भीड़ की भांति व्यक्त होने लगे। क्यों नहीं? अंतत: वह सब अब, व्यक्ति ना रहकर, भीड़ का हिस्सा जो बन गए थे। ऐसा कहो कि स्वयं भीड़ ही बन गए थे। भीड़ कभी शांत नहीं होती। वह भीड़ भी शांत नहीं थी।
भीड़ में शब्द जन्म लेने लगे। धीमी धीमी ध्वनि जंगल की आग की भांति व्याप्त होने लगी, जो हिम के मार्ग से पूरे पहाड़ पर व्याप्त हो गई।

भीड़ चित्रों से आकर्षित होकर नहीं जुटी थी। और ना ही कोई वफ़ाई एवं जीत की चित्रकारी से प्रभावित था। वह तो केवल प्रदर्शनी के अनूठे स्थल के विस्मय से प्रभावित हो कर आई थी।
घड़ी ने ग्यारह बजे की सूचना दी। अंधकार ने दीर्घा पर अपना आधिपत्य जमा दिया था। सब की बातें बंध हो गई। सर्वत्र स्वयंभू मौन छा गया। जैसा गहरा मौन, वैसा ही गहन अंधकार। ऐसे गहन काले मौन में प्रवेश करने का साहस किया इन शब्दों ने....
“रंग एवं प्रकाश को हम पसंद करते हैं, स्नेह भी करते हैं। मैं और आप, हर स्थान पर सदैव रंगों की अपेक्षा करते हैं, प्रकाश की अपेक्षा करते हैं। हम में से कोई भी अंधकार को पसंद नहीं करता। एक ऐसा अंधकार जहां कुछ भी ना हो। सब कुछ खाली हो। प्रकाश विहीन वह क्षण, रंग विहीन वह क्षण। अंधकार। केवल अंधकार। गहन अंधकार। जहां हम आँखें खुल्ली रखकर भी कुछ ना देख सकें ....”
भीड़ के कानों पर यह शब्द पड रहे थे। इस गहन अंधकार में दिशाहिन भीड़ शब्दों की दिशा में गति कर रही थी। एक निरुद्देश्य भीड़।
“हम अंधकार को पसंद नहीं करते। वास्तव में हम अंधकार से धृणा करते हैं। हां, यह स्वाभाविक है, सहज है। किन्तु, क्या आप जानते हो कि अंधकार का रंग होता है? वह भी रंगों से भरपूर होता है? केवल एक नहीं अपितु अनेक रंग होते हैं इस अंधकार में। अंधकार अनेक रंगों को धारण करता है, अपने अंदर उन्हें समा लेता है।
रंगों को जानने से पहले, प्रकाश को जानने से पहले, हमें अंधकार का अनुभव करना होगा। तत्पश्चात ही रंगों कि अनुभूति कर पाएंगे।
मुझे ज्ञात है कि इन शब्दों पर आप संदेह करोगे। यह स्वाभाविक है। मैं आपके इस संदेह का सन्मान करती हूँ। किन्तु मेरा विश्वास कीजिये, मेरे यह शब्द संदेह से परे हैं। यह सत्य है कि अंधकार एक रंग है। अंधकार में भी जीवन के रंग होते हैं। आप को अपनी खुली आँखें बंद करनी है और अपने भीतर देखना है। रंग निखर उठेंगे। जीवन के इन रंगों का आनंद लें।“
उन शब्दों को सुनकर भीड़ और भी व्याकुल हो गई।
अनेक संदेह भीड़ में प्रकट हो गए।
एक, अंधकार में आँखें कैसे बंध की जा सकती है? और यदि आँखें खुली रख भी ली तो क्या अंतर पड़ेगा?
दो, अंधकार के रंग होते हैं क्या?
तीन, यदि अंधकार के रंग हैं तो वह कौन से है? उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
चार, कौन है जो इन शब्दों से भीड़ को दिशा दे रहा है?
पाँच, अंधकार के इस सौन्दर्य को तुम कैसे जानते हो?
ऐसे अनेक प्रश्नों से घिर गई वह भीड़।
“मैं दे सकता हूं इन सभी प्रश्नों के उत्तर, यदि आप में इसे सुनने और जानने की उत्कंठा हो, धैर्य हो, साहस हो। आप के ह्रदय में इसके लिए तीव्र मनसा हो तो मैं आप को सब कुछ बता दूंगा। पूरी

कहानी मैं प्रारम्भ से बताऊंगा। प्रत्येक क्षण, प्रत्येक घटना एवं प्रत्येक द्रश्य आप के सम्मुख रख दूंगा।“ मैंने कहा।

“हाँ, हाँ, हमें सब सुनना है, सब देखना है, सब जानना है।“ भीड़ ने समूहगान में अपनी इच्छा प्रकट की।“ मुझे यह समूहगान कर्णप्रिय नहीं लगा।

“किन्तु मेरी एक बात मनानी होगी आपको।“ मैंने भीड़ के सम्मुख मेरी बात रखी।

“हमें आपकी सभी बातें स्वीकार्य है।“ भीड़ ने उत्तर दिया।

“ठीक है। सुनो। आप को एक वचन देना होगा कि इस पूरी कहानी के समय आप भीड़ का हिस्सा ना बनकर एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में मेरे साथ रहोगे।“

“तुम मुझे भीड़ से भिन्न स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में क्यूँ चाहते हो?” भीड़ में से एक आवाज आई।

“भीड़ के विचार नहीं होते, ना ही भावनाएं होती है। ना ही मस्तिष्क होता है और ना ही ह्रदय। यह सब केवल एक स्वतंत्र व्यक्ति में ही होता है।“

“ओह, अब समजा।“ सभी व्यक्ति ने कहा,” अब मैं एक व्यक्ति हूँ, किसी भीड़ का हिस्सा नहीं।“

भीड़ टूट गई, अनेक व्यक्तियों में बिखर गई। किन्तु अभी भी कोई भीड़ तो वहाँ थी ही। मैं हंस पड़ा,’ कितनी तुच्छ होती है भीड़, कितना समृध्ध होता है प्रत्येक व्यक्ति।‘

मैं भी भीड़ को छोड़ आया। चलिये, आपके साथ यात्रा का प्रारम्भ करते हैं। हाँ, हाँ, आपके साथ, केवल आपके साथ, अकेले में। मैं और आप, केवल दो व्यक्ति।

“तुम कौन हो?’ आपने पूछा।

“मेरे अधरों पर आए स्मित को देखो, जो तुम्हारे कारण जन्मा है। मुझे तुम्हारा प्रश्न पूछना अच्छा लगा। व्यक्ति सदैव प्रश्न पूछता है, भीड़ नहीं। मुझे आनंद और संतोष है कि अब तुम स्वतंत्र व्यक्ति बन चुके हो। तुम अभिनंदन के पात्र हो। आशा करता हूँ कि कथा के अंत तक व्यक्ति ही बने रहोगे।“ मैंने कहा।

“मुझे तुम्हारे अधरों पर आए स्मित का अनुभव हो रहा है। मेरा वचन है कि मैं कहानी के अंत तक भीड़ का हिस्सा नहीं ....।“

“कहानी सुनने के बाद, मुझे विश्वास है कि तुम फिर कभी भीड़ में घुल नहीं जाओगे।”

“मैं खुश हूँ कि मैं एक व्यक्ति हूँ, पूर्ण रूप से स्वतंत्र व्यक्ति।“ तुम्हारे मुख पर स्मित है।

“स्वागत है, हे व्यक्ति। किन्तु रुक जाओ, चित्रों कि तरफ नहीं जाना। कथा सम्पन्न होने के पश्चात तुम प्रदर्शनी में जा सकते हो। चलो तुम्हें मैं कथा कि तरफ ले चलूँ।“ मैंने आँखें बंध कर ली।

प्रकाश का एक पुंज मंच पर उभरने लगा जिसमें वफ़ाई दिखाई दे रही थी। वह शांत थी। वह वातायन से दूर गगन की तरफ देख रही थी। भीड़ का टुकड़ा एवं प्रत्येक व्यक्ति वफ़ाई को देख रहे था।

मैं और आप भी शांत हो जाते हैं। चलो दूर क्षितिज में देखते हैं। कोई कथा वहाँ हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

फरवरी का महिना कुछ क्षण पहले ही विदा ले चुका था। अंधेरी रात ने मार्च का स्वागत हिम की वर्षा से किया। वह ग्रीष्म के आगमन की दस्तक का महिना था, किन्तु तेज हिम वर्षा हो रही थी।

एक युवती अपने कक्ष में थी। पर्वत सुंदरी थी वह। आयु चोबिस वर्ष के आसपास। पाँच फिट छः इंच की ऊंचाई, पतली सी, पारंपरिक पहाड़ी मुस्लिम लड़की के वस्त्र में थी वह।

उसकी पीठ दिख रही थी। पीठ पर लंबे, काले, घने, खुले और सीधे बाल लहरा रहे थे। खुले बाल उड़ते थे और बार बार उसकी आँखों के सामने आ जाते थे, वह उसे पीछे धकेलती रहती थी। किन्तु बाल जो थे नटखट, बार बार आँखों के सामने आ जाते थे। फिर भी उस लड़की की अपने उड़ते बालों को बांधने की इच्छा नहीं थी और ना ही उसने ऐसी कोई चेष्टा की। उसे खुले बाल पसंद थे। मुझे भी खुले बालों में वह पसंद थी। आपको भी?

सहसा वह घूम गई।

उसका मुख दिखने लगा। यही मनसा थी ना आप की?

पहाड़ी घाटी की भांति गहन और तेज उसकी दो आँखें। सौन्दर्य की भांति सुंदर थी वह। चुस्त काले कपड़ों मे सज्ज थी वह। उस के शरीर के प्रत्येक घुमाव सौन्दर्य से पूर्ण थे, लावण्य से भरे थे।

उसके अधरों पर मीठा सा स्मित था, कोई गीत था। उस के अधर, सहज ही गुलाबी थे। नहीं, उसने कभी लिपस्टिक का प्रयोग नहीं किया था। वह सदैव सभी शृंगार प्रसाधनों से दूर ही रहती थी। वह जन्मी ही सुंदर थी और बड़ी भी सुंदर ही हुई थी। उसने अपने सौन्दर्य को अखंडित रखा था। वह अभी भी सुंदर थी।

उस के शरीर का रंग बहते रक्त के कारण लाल, अपितु गुलाबी सा लगता था। उसके गाल गुलाबी थे। कोई चिंता उसके मुख पर दिख रही थी जो उस मुख को और भी लाल बनाती थी, उसके सौन्दर्य में अभिवृध्धी करती थी।

वफ़ाई नाम था उस यौवना का।

वह अपना सामान जुटाने में व्यस्त थी। कल उसे दो हजार किलो मीटर से अधिक दूरी की यात्रा पर निकलना था। वफ़ाई को वह यात्रा जीप से करनी थी, स्वयं गाड़ी चलकर।

कुछ दिनों के लिए वह अपना सब कुछ- अपना गाँव, अपना पहाड़, पति बशीर, बॉस मनोज दास, साथी सहयोगी--- सब को भूलकर कहीं एकांत में रहना चाहती थी अथवा कुछ समय स्वयं के साथ व्यतीत करना चाहती थी? जो भी हो, वफ़ाई ने इस पूरे लंबे मार्ग पर स्वयं ही जीप चलाकर यात्रा करने का साहसी निश्चय कर लिया था।

घड़ी में आधी रात के साढ़े बारह बज चुके थे। वफ़ाई की यात्रा की तैयारी अभी भी अधूरी थी। वफ़ाई सब काम शीघ्रता से कर रही थी किन्तु समय वफ़ाई से अधिक गतिमान था।

घर के अंदर ठंड थी तो घर के बाहर ठंडी हवाएँ चल रही थी। किन्तु वफ़ाई ने भी ठंडी हवाओं का कडा सामना किया। अंतत: अपनी तैयारी पूर्ण कर ली।

एक गहरी सांस ली और वफ़ाई ने वातायन से बाहर देखा। मार्ग किसी मृत शरीर की भांति शांत था। काली अंधेरी रात में किसी घर से आनेवाले मंद प्रकाश की किरणों में कहीं कहीं हिम चमक रहा था। हिम अनराधार बरस रहा था। उसने अपनी दायीं हथेली खिड़की से बाहर धर दी। ठंडे हिम से उसकी हथेली भर गई। एक शीतल लहर शरीर में प्रवाहित हो गई। वह कंपित हो गई। वफ़ाई ने हथेली अंदर खींच ली, वातायन बंध कर दीया।

ठंडी रात बीत गई। वफ़ाई जाग चुकी थी, अपनी यात्रा के लिए तैयार थी। उसने द्वार खोला और गगन की तरफ देखा। कल रात की तुलना में वह स्वच्छ लग रहा था। हिम थक गया था अथवा गगन के पास धरती पर गिराने के लिए हिम बचा ही न थ।

गहरा नीला आकाश पूरी तरह से स्वच्छ नहीं था। बिखरे हुए खाली बादल गगन के मैदान पर दौड़ रहे थे। प्रकाश न तो तेज था न धुंधला था। पहाड़ों पर सूरज को उगने के लिए संघर्ष करना होगा। वफ़ाई अपनी यात्रा के लिए तैयार थी, नई यात्रा को लेकर उत्तेजित भी थी, उत्साहित भी थी।

)()()()()(

वफ़ाई का शरीर कोई भिन्न ही भाषा बोल रहा था, कुछ भिन्न अनुभव कर रहा था। उस ने पारंपरिक वस्त्रों को त्याग दिया। जींस और टॉप पहन लिया। काले जींस पर मदिरा सा लाल रंग का टी शर्ट और खिलाड़ियों वाले जूते थे। उसने एक नयी उमंग और नया स्मित भी पहन लिया था।

उस ने अपना सामान संभाला और जीप में डाल दिया। अम्मा उस की सहायता कर रही थी। उस ने अम्मा की तरफ एक स्मित किया। अम्मा ने मौन, जवाबी स्मित दिया।

वफ़ाई ने अपने कक्ष को बंध किया, उसे एक मीठी नजर से देखा और मोहक स्मित दिया। द्वार से छुटकर हिम का एक टुकड़ा नीचे गिरा। वफ़ाई नीचे झुकी और हिम के उस टुकड़े को उठा लिया, उसे हथेली पर रख दिया। हिम पिघल गया, पानी में परिवर्तित हो गया, वफ़ाई के शरीर को ठंडी लहर दे गया। उसे वह मनभावन लगा। वह हंस पड़ी।

“तुम हंस क्यूँ रही हो?” अम्मा ने पूछा।

“समय भी इस हिम की भांति है, अम्मा। यह समय शीघ्र ही पिघल जाएगा और मैं लौट आऊँगी। इस प्यारी सी धरती के पास, इस ऊंचे पहाड़ों के पास मैं लौट आऊँगी। मैं शीघ्र ही लौट आऊँगी, मेरी प्रतीक्षा करना।“ वफ़ाई ने हथेली पर पिघल चुके हिम के पानी की कुछ बूंदें पी। वफ़ाई तृप्त हो गई। वफ़ाई ने जीप चालू कर दी, हाथ हिलाकर, स्मित देकर अम्मा से विदाय ली। अम्मा स्थिर सी खड़ी रही, जाती हुई वफ़ाई को शून्य भाव से देखती रही।

वफ़ाई की कच्छ यात्रा प्रारम्भ हो गई।

सारा नगर शांत था, सो रहा था। मार्ग पर ना कोई पुरुष था न कोई स्त्री थी। कुछ पंखी थे जो गिरकर टूटे हुए हिम के साथ खेल रहे थे, मधुर ध्वनि रच रहे थे, गीत गा रहे थे। एक मधुर स्मित वफ़ाई के अधरों पर आ गया। मन और शरीर में आनंद व्याप्त हो गया।

वफ़ाई की जीप अपने मार्ग पर चलने लगी।

अम्मा, घर, गलियाँ, लोग, मकान और नगर धीरे धीरे पीछे छूटते जा रहे थे। जीप के दर्पण में वफ़ाई को यह सब कुछ दिखाई दे रहा था। वफ़ाई ने जीप रोक दी, चाबी घुमाई और जीप का एंजिन शांत हो गया। समय भी रुक गया। वफ़ाई जीप से बाहर निकल आई।

3

वफ़ाई ने घूमकर अपने नगर को देखा। पूरा नगर हिम की चादर में लपेटा हुआ था। पूरी तरह से श्वेत था नगर। केवल श्वेत रंग, बाकी सभी रंग अद्रश्य हो गए थे। मकानों के मूल रंग हिम की श्वेत चादरों में कहीं छुप गए थे। लंबे क्षणों तक वह नगर को देखती रही। उसने अपनी आँखें क्षण भर बंध की और फिर खोल दी।

उसने केमरे को निकाला और नगर की असंख्य तस्वीरें लेने लगी। कभी दूर से, कभी समीप से, कभी इस कोने से तो कभी उस कोने से, संभवित प्रत्येक कोने से तस्वीरें ली। एक विडियो उतारा। पूरे नगर की 360 डिग्री वाली तस्वीरें खींची।

वफ़ाई ने अपने मोबाइल फोन से पहाड़ों के साथ, नगर के साथ, मार्ग के साथ, जम सी गई नदी के साथ, बहते बहते अटक से गए झरनों के साथ और जीप के साथ स्वयं की असंख्य तस्वीरें ली।

किन्तु वफ़ाई का मन अभी भी भरा नहीं था। उसे लग रहा था कि इस नगर में लौटने में उसे लंबा समय लग सकता है। संभव है कि वह फिर कभी लौटे ही नहीं।

नगर के पास बहती नदी स्थिर थी। किन्तु वफ़ाई का मन स्थिर नहीं था।

यह स्थल, नगर, पहाड़, घाटी, नदी, झरने, हिम, इन सभी को वह ह्रदय से स्नेह करती थी। इन सब को छोडने पर वह विचलित थी। अपने अंदर इन सबको समेट कर वह जीप में बैठ गई।

वफ़ाई ने अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। उसकी आँखों से निकले कुछ अश्रुओं ने भी अपनी यात्रा चालू कर दी। जीप का मार्ग हिम के कारण शीतल था किन्तु वफ़ाई के गालों पर चल रहे अश्रु उष्ण थे।

एक घंटे की यात्रा के पश्चात वफ़ाई को रुकना पड़ा। अश्रु तो कब के रुक गए थे। गगन स्वच्छ था। किन्तु मार्ग स्वच्छ नहीं था। हिम से मार्ग अवरुध्ध था।

नगर से घाटी की तरफ जाने का यही एक मार्ग था, जो हिम से आच्छादित था और बंध था। हिम की उस सागर को पार करना संभव नहीं था, अत: वफ़ाई ने जीप रोक ली और स्थिति को समझने का प्रयास करने लगी।

हिम को काट कर दूर करने में सेना के अनेक जवान लगे हुए थे।

वफ़ाई ने एक जेयन से पूछा,"मार्ग कब तक साफ हो जाएगा?"

“अभी भी एक से डेढ़ घंटा लग सकता है।“ सैनिक ने जवाब दिया।

वफ़ाई ने घड़ी देखि, 7.37।

“एक घंटा अथवा अधिक समय तक प्रतीक्षा करनी होगी।“ वफ़ाई मन ही मन बोली।

वह घाटी को देखने लगी। जन्म से वह घाटी को देखती आई थी। और अब वह चोबिस की हो गई थी। इतने वर्षों से घाटी कहीं नहीं गई थी, बस वहीं खड़ी थी।

वफ़ाई इधर उधर घूमती रही। जीप को, मार्ग को और घड़ी को देखती रही। इस बार घड़ी में बज रहे थे 7:48।

समय गति नहीं कर रहा था। वफ़ाई चिंतित हो गई।

वफ़ाई के कानों पर किसी के हंसने की ध्वनि पड़ी। उसने चारों दिशाओं में देखा किन्तु वहाँ कोई नहीं था। उसने पुन: उस हास्य की तरफ ध्यान केन्द्रित किया, उसे पुन: वही हास्य सुनाई दीया।

“किस के हास्य की प्रतिध्वनि है यह?” वफ़ाई ने स्वयं से पूछा। बार बार हास्य की प्रतिध्वनि घाटियों में गूंजने लगी।

“कौन हो तुम? कहाँ हो? इस प्रकार से हंस क्यूँ रहे हो?” वफ़ाई विचलित हो गई।

“हा... हा...” उस हास्य की प्रतिध्वनि पुन: गूंजने लगी।

“छुपे मत रहो, यदि साहस हो तो सामने आओ...” वफ़ाई ने आव्हान किया।

“वफ़ाई, मैं तो तुम्हारे सामने ही हूँ, मुझे पहचानो।“ उसने कहा।

“मैं तुम्हें देख नहीं पा रही हूं। कौन हो तुम? कहाँ हो तुम?” वफ़ाई चारों तरफ उसे ढूँढने लगी।

“मैं पहाड़ हूँ, तुम्हारा मित्र।“ उसने कहा।

वफ़ाई ने पर्वत की तरफ देखा। उसे अनुभव होने लगा कि पर्वत हंस रहा है।

“ओ...ह॰ तो तुम हो...” वफ़ाई ने स्मित किया, पहाड़ को नीचे से ऊपर तक देखा। उस पर देवदार के वृक्ष खड़े थे। देवदार की शाखाओं पर एवं पत्तों पर हिम थी। देवदार श्वेत हो गए थे। बहती शीतल पवन देवदार की शाखाओं को कंपित कर रही थी। ऐसा लगता था कि कोई वृध्ध ठंड से कांप रहा हो।

“मन करता है कि दौड़ जाऊं और सभी देवदार पर कंबल ओढा दूँ।“

अपने ही विचार पर वह हंस पड़ी। “एक ही कंबल इतने सारे देवदार को मैं कैसे ओढा पाउंगी?”

बादलों से सूरज निकल आया। श्वेत तथा उष्ण सूर्य किरणें पूरे पहाड़ पर बिखर गई। चारों दिशाओं में सौदर्य निखर उठा। श्वेत हिम पर श्वेत सूर्य किरणें पर्वत को प्रकाशवान करने लगी।

श्वेत रंग के साम्राज्य में वफ़ाई कि आँखों ने किसी और रंग को पकड़ लिया। वह उसे ध्यान से देखने लगी।

“अरे... यह तो नीला फूल है, कितना सुंदर है?” वह स्वयं से बातें करने लगी,”वाह... यह तो केसर का फूल है.... नीला पौधा... केसर का पौधा... वसंत ऋतु का पहला पुष्प।“ वह आनंद से उछल पड़ी,”मित्र पर्वत, तेरे ह्रदय पर वसंत ने आगमन कर दिया है।“

वफ़ाई को लगा की पहाड़ उसके शब्दों का प्रतिभाव दे रहा है, जैसे वह वफ़ाई से बातें करना चाहता हो, जैसे वह वफ़ाई को स्मित दे रहा हो।

“यह समय तो वसंत के स्वागत का है और तुम मुझे छोडकर जा रही हो? हे सखी, कहाँ जा रही हो?” पर्वत ने पूछा।

“मित्र, मुझे किसी कार्यवश जाना पड रहा है, किन्तु मैं शीघ्र लौट आऊँगी।“

“ओह, कब तक लौट आओगी?” पर्वत ने गहरी सांस ली।

“अति शीघ्र। तब हम खूब बातें करेंगे। “

“तुम्हारी यह यात्रा, यात्रा में मिलने वाले व्यक्ति, यात्रा के अनुभव, घटनाएँ.... आदि सब सुनने के लिए मैं उत्सुक हूं।“ पहाड़ ने कहा।

“तब हम घंटों तक बातें करेंगे। तुम तो जानते हो कि तुम ही मेरे एक मात्र मित्र हो जो सदैव मेरे शब्दों को सुनते रहते हो, कभी भी, कहीं भी, लंबे समय तक। मैं बोलती रहती हूँ और तुम सुनते रहते हो।“

“हाँ, मुझे अभी भी याद है जब तुम पहली बार मुझ से बातें करने आई थी तब तुम चार पाँच साल की थी। तब तुम्हारे पास शब्द थे, भाव भी थे किन्तु भाषा नहीं थी।“

“तब तो मैं शब्दों से पूरा वाक्य भी नहीं बना सकती थी।“

“फिर भी मैं तुम्हारे भावों को समज जाता था।“

“किन्तु अब मैं बच्ची नहीं हूँ, तुम्हें ज्ञात है ना?”

“मुझे ज्ञात है, वफ़ाई। अब तुम एक यौवना हो, बड़ी हो गई हो। अब तुम्हारे पास शब्द भी है, विचार भी है, वाक्य भी है और भाव भी है। बस थोड़ा सा अंतर हो गया है इन भावों में। अब तुम शृंगारिक बातें भी सोचती हो, है ना?” पर्वत ने कहा।

“हे पुरुष, क्या मनसा है तुम्हारी? तुम तो नटखट से होते जा रहे हो। क्या तुम मेरे प्रेमी हो?” वफ़ाई ने एक तरफ तो पर्वत को अपने शब्दों से छेड़ा तो स्वयं ही लज्जा से प्रेमिका की भांति लाल हो गई। पहाड़ ने उस भावों को पकड़ लिया।

“मेरी मनसा तुम्हें इस यात्रा पर जाने से रोकना है।“

“क्यूँ? तुम मुझे कैसे रोकोगे?” वफ़ाई ने थोड़ा रोष दिखाया।

“तुमने इस यात्रा का आयोजन तीन चार दिनों से कर के रखा है किन्तु मुझे वह बताने का कष्ट तक नहीं किया है तुमने। इस बात पर मैं गुस्सा हूँ।“

“प्रत्येक बात तुम्हें बताना आवश्यक है क्या?”

“हां। मैं ही तो एक मात्र मित्र हूँ तुम्हारा। मुझे ज्ञात है कि इस अभियान को लेकर तुम गुस्से में हो। ठीक कह रहा हूँ ना मैं?”

“हां हूं। और यही कारण है कि मैंने इस विषय पर किसी से बात नहीं की है। तुम से भी नहीं। मैं गुस्सा हूँ।“

“ललित से? तुम्हारे मुख पर के रोष को मैं देख भी सकता हूँ और अनुभव भी कर सकता हूँ। मैं भी तो रोष में हूँ। उसे भी तो देख लो।“

“हे श्रीमान, आप क्यूँ गुस्सा हो? और मैं उसे कैसे देखूँ?” वफ़ाई ने प्रश्नार्थ मुद्रा में अपने दोनों हाथ पहाड़ की तरफ फैला दिये।

“पिछले दो तीन दिनों से हो रही बरफ वर्षा ही मेरे रोष का रूप है। वास्तव में मेरे रोष के कारण भारी हिम ने तुम्हारा मार्ग रोके रखा है। यह मेरी योजना है, प्रिय सखी वफ़ाई।“ पहाड़ ने कहा।

“तो यही कारण है इस मौसम में इतनी तीव्र हिम वर्षा की? मैं नहीं मानती तुम्हारी यह बात।“
“वह तुम्हारी समस्या है। किन्तु जब तक मैं नहीं चाहुं तुम यहाँ से जा नहीं सकती।“
“वह कैसे? तुम मुझे किसी भी तरह रोक नहीं सकते।“ वफ़ाई ने रोष दिखाया।
“मार्ग पर की हिम जब तक हटेगी नहीं, तुम जा नहीं सकोगी।“
“सैनिक लगे हुए हैं उसे हटाने में और शीघ्र ही वह मार्ग साफ हो जाएगा। फिर तुम कुछ नहीं कर पाओगे, मित्र।“
“तुम देखना चाहोगी कि मैं क्या कर सकता हूँ?”
“हाँ, मैं तुम्हारा आव्हान करती हूँ। जो करना हो करके दिखाओ।“
“ठीक है, पीछे घूमकर मार्ग को देखो।“
वफ़ाई मार्ग की तरफ घूमी। सहसा ताजी और तीव्र हिम वर्षा होने आगी। मार्ग जो कुछ साफ किया गया था वह भी फिर से हिम से ढंक गया। सैनिकों ने काम रोक दिया। मार्ग पुन: बंध हो गया। वफ़ाई रोषित हो गई। वह नीचे झुकी और एक बड़े पत्थर को उठाया, अपनी तमाम शक्ति एकत्र की और पहाड़ की तरफ उस पत्थर को उछाल दिया।
“यह सब रोक लो। मेरे साथ, मेरी भावनाओं के साथ मत खेलो।“ वफ़ाई के हाथ से छूटा पत्थर घाटी की गहराइयों में जा गिरा।
“शांत हो जाओ। मैं तुम्हें यात्रा पर जाने दूंगा किन्तु मेरी एक शर्त है।” पहाड़ ने प्रस्ताव रखा।
“”क्या है?” वफ़ाई ने शुष्कता से जवाब दिया।
“ललित ने तुम्हारे साथ जो भी किया वह तुमे मुझे बताना होगा। उसके बाद तुम जा सकती हो। “
“ठीक है, तो सुनो।“ वफ़ाई ने सहमति दी।

वफ़ाई पर्वत को सब कुछ बताने लगी,"तीन दिन पहले, मैं अपने काम में व्यस्त थी तब ललित ने मुझे बुलाया।"

"वफ़ाई, तुम्हारे लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है। इस दैनिक पत्र के तस्वीर विभाग की तुम प्रमुख हो, तुम सक्षम हो और ऊर्जा से भरपूर हो। मेरा विश्वास तुम पर है।" ललित के अधरों पर स्मित था।

"कैसा अभियान है? क्या योजना है?"वफ़ाई उत्साहित हो गई।

"तुम सदैव कुछ नया करती रहती हो। तुम्हारे अंदर कुछ विशेष बात है। तुम सामान्य सी लग रही बात को भी भिन्न एवं विशेष रूप से प्रस्तुत करती हो।"

"मेरे लिए यह केवल व्यवसाय ही नहीं अपितु मेरा प्रेम है, मेरी धुन है।"

"तभी तो, इतने अल्प समय में कई वरिष्ठ लोगों को पीछे छोड़ कर चोबिस साल की आयु में ही इस विभाग की प्रमुख बन चुकी हो।"

"ठीक है, जी। चलिये, हम जो बात..." वफ़ाई को ललित द्वारा उनकी आयु बताना उचित नहीं लगा। वह कुर्सी से उठी और खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई।

"मुझे विश्वास है कि तुम उस कार्य को पसंद करोगी। तुम उसका पूर्ण आनंद उठाओगी। इस कार्य के लिए मैंने तुम्हें पसंद किया है।"ललित ने वफ़ाई को प्रोत्साहित किया।

वफ़ाई ने जवाबी स्मित दिया।

"देश के पश्चिम भाग में कच्छ नामक क्षेत्र है। विस्तार की द्रष्टि से देश का सबसे विशाल जिल्ला है। वहाँ विशाल मरुभूमि भी है। मरुभूमि का भी अपना सौन्दर्य होता है।"ललित ने वफ़ाई की तरफ देखा। वफ़ाई शांत थी, खिड़की से बाहर दूर सुदूर पहाड़ियों को देख रही थी, स्थिर थी।

"वहाँ एक अदभूत घटना होती है जो विरल भी है। उसे देखना, उस अनुपम क्षण को अपने केमरे में कैद करना, कुछ अनन्य ही अनुभव होता है। जब तुम यह काम कर लोगी तो वह मनभावन कविता बन जाएगी। तुम यह सब करने जा रही हो।" ललित ने कहा,"हाँ, वफ़ाई, तुम ही वह व्यक्ति हो जो यह सब करने जा रही हो।"

वफ़ाई अभी भी किसी प्रकार से आंदोलित नहीं हुई। उसने ललित को भाव शून्य द्रष्टि से देखा। वफ़ाई की इस मुद्रा को देखकर ललित विचलित हो गया।

"वफ़ाई, तुम कोई प्रतिक्रिया क्यूँ नहीं दे रही हो? तुम हो कहाँ?" ललित ने उसका ध्यान खींचने की चेष्टा की।

"मैं यहीं हूं। आप के शब्दों को ध्यान से सुन रही हूँ।"

"तो क्या तुम उस घटना के विषय में जानने को उत्सुक नहीं हो? उस यात्रा के विषय में, उस अभियान के विषय में?"

“जब सब कुछ निश्चित हो गया है, मुझे केवल उस पर कार्य करना है, तो मेरे पास प्रतिक्रिया के लिए अवसर बचा ही नहीं है।“वफ़ाई निस्पृह हो गई।

ललित ने कॉफी के दोनों कप टेबल से उठाए और वफ़ाई के समीप गया। एक कप वफ़ाई को दिया।

“ऐसी बात नहीं है। वास्तव में तुम इस कार्य के लिए सबसे योग्य हो, इसीलिए मैंने तुम्हें पसंद किया है।“

“मान लेती हूं।“ वफ़ाई ने कॉफी का पहला घूंट पिया। ललित का तनाव कम हुआ।

“चलो मैं विस्तार से बताता हूँ।“ ललित ने कॉफी टेबल पर छोड़ दी और खुला हुआ लेपटोप उठा लाया।

”ठंड की ऋतु में पुर्णिमा के दिन वहाँ एक अनुपम घटना होती है। पश्चिम की तरफ सूर्यास्त होता है तब सूर्य पूरे कद का होता है, बड़ा एवं विशाल। पूर्व में चंद्रोदय होता है। चन्द्र भी सूर्य की भांति पूर्ण और विशाल। इन दोनों को हम एक साथ देख सकते हैं। एक पश्चिम में, पूर्ण लाल। दूसरा पूर्व में, पूर्ण श्वेत। सूर्य क्रोधित एवं उष्ण तो चन्द्र शांत एवं शीतल। दोनों का एक ही समय पर, एक ही स्थान पर अस्तित्व होता है, किन्तु एक दूसरे से विपरीत। एक अदभूत, विस्मय से पूर्ण, मनोरम्य द्रश्य।“ललित उत्साह से भरा था।

वफ़ाई शांत खड़ी सब देख रही थी, सुन रही थी। वफ़ाई एवं ललित दोनों एक साथ थे, एक सूर्य था तो दूसरी चंद्रमा।

“तुम उस क्षण की तस्वीरें खींचोगी। अपनी कला से कैमरे में कैद करोगी। तुम उसकी कहानी बनाओगी।“ ललित अत्यंत उत्साहित था।

“हाँ, यह अदभूत है, मुझे पसंद आया।“ वफ़ाई ने कॉफी पूरी कर ली। ललित ने गहरी सांस ली।

“तो तुम्हें कल निकलना होगा। दो हवाई टिकिट तैयार है। एक तुम्हारे लिए, दूसरी अंकुश के लिए।“ ललित ने बताया।

“यह प्रोजेक्ट के लिए आपने मुझे ही क्यूँ चुना, जो इतनी दूरी पर है?” वफ़ाई ने संदेह किया।

“मैं पहले ही बता चुका हूँ कि तुम में प्रतिभा है और तुम यह कर सकती हो।“

“आप पक्षपाती हैं। आप मुझे दूर भेज कर दंडित करना चाहते हो जिसका कारण सर्व विदित है।“

कुछ दिन पहले घटी घटना, ललित और वफ़ाई दोनों को, याद आ गई।

ललित ने एक पार्टी रखी थी। अनेक जाने माने व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था जिसमें सोहेल भी था। सोहेल प्रभावशाली स्थानीय व्यक्ति था।

पार्टी में वफ़ाई तस्वीरें ले रही थी। वफ़ाई अपने कार्य में मग्न थी, अपने कार्य को समर्पित थी। उत्तम से उत्तम तस्वीर के लिए वह जमीन तक झुक भी जाती थी जिससे उसके कपड़े मलिन हो गए थे, किन्तु वह अपने कार्य पर ही ध्यान दे रही थी।

सोहेल की द्रष्टि वफ़ाई को, वफ़ाई के सौन्दर्य को देख रह थी। वफ़ाई के शरीर के प्रत्येक घुमाव का पीछा कर रही थी। वफ़ाई को भी यह ज्ञात था कि सोहेल की द्रष्टि का लक्ष्य कहाँ था। किन्तु वह अपना काम करती रही।

पार्टी सम्पन्न हो गई। सभी अतिथि जाने लगे। कुछ विशेष अतिथि, सोहेल सहित, ही वहाँ थे। वफ़ाई ने ललित और सोहेल की विशेष तस्वीरें भी खींची।

सोहेल वफ़ाई के समीप आया,"आपने जो तस्वीरें ली है उसे मैं देख सकता हूँ?" सोहेल ने पूछा।

"श्रीमान, यह सब देखने के लिए आप को कल तक प्रतीक्षा करनी होगी। कल की आवृति में यह सब..." वफ़ाई ने सस्मित कहा और दो कदम पीछे हट गई।

सोहेल समझ गया कि वफ़ाई उसे टाल रही है।

"हाँ, मैं कल देख लूँगा। आओ एक सेल्फी लेते हैं।"सोहेल ने प्रस्ताव रखा।

वफ़ाई ने सोहेल का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। सोहेल निराश हो गया। वफ़ाई चली गई।

सोहेल को वह स्वयं का अपमान लगा। उसने यह बात ललित को बताई। ललित ने वफ़ाई की तरफ से क्षमा मांग ली।

उस दिवस से ललित वफ़ाई पर क्रोधित था।

"वफ़ाई, मैं पक्षपाती नहीं हूँ। यह कार्य तुम्हें तुम्हारी क्षमता के आधार पर ही दिया गया है।"ललित ने कहा।

"यदि ऐसा ही है तो मेरी कुछ बातें माननी पड़ेगी।"

"कौन सी बातें?"

"प्रथम, मैं यह कार्य अकेली ही पूर्ण करूंगी। दूसरी, मैं हवाई यात्रा नहीं करूंगी किन्तु मेरी जीप से करूंगी। तीसरी, मेरी जीप मैं ही चलाऊँगी, मुझे कोई साथी नहीं चाहिए। चौथी, यह कार्य के पूर्ण करने के लिए कोई समय सीमा नहीं रहेगी।" वफ़ाई ने ललित की तरफ देखा।

"यह सभी अस्वीकार्य है। तुम नहीं जानती कि तुम क्या मांग रही हो। तुम..."

"मैंने मेरी बात रख दी है। निर्णय आप को करना होगा।"वफ़ाई ललित के कक्ष से बाहर निकल गई।

ललित वफ़ाई को जाते हुए देखता रहा। खुलकर बंध हुए द्वार ने अनेक संकेत दे दिये, जिससे ललित विचलित हो उठा।

ललित उस कार्य को पूरा करवाना चाहता था जो व्यावसायिक नीति का भाग था। उस ने स्थिति की समीक्षा की। वरिष्ठ सहयोगियों के साथ सारी बातों पर चर्चा की। सभी ने साथ मिलकर निर्णय किया। वफ़ाई को बुलाया गया।

"वफ़ाई तुम्हारी सभी बातें मान ली गयी है। किन्तु स्मरण रहे कि मुझे श्रेष्ठ परिणाम चाहिए।" ललित ने कुछ कागज वफ़ाई को सौंपे,"अभियान कि सफलता के लिए शुभकामना।"

"और देख लो मैं इस यात्रा पर निकल चुकी हूँ, मित्र पर्वत।"वफ़ाई ने पानी पिया, गहरी सांस ली।

सामने खड़ा पर्वत वफ़ाई की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।

“तो यह बात है।“ पर्वत ने कहा।

“हाँ, यही बात है। अब तो मुझे जाने दो।“ वफ़ाई ने बिनती की।

“सखी वफ़ाई, अब तुम जा सकती हो। तुम्हारा मार्ग खुला गया है।“ पर्वत की एक ठंडी लहर वफ़ाई को छु गई।

“बहन जी, मार्ग आंशिक रूप से खोल दिया गया है। आप आगे जा सकती हो।“ एक सैनिक ने आकर वफ़ाई को सूचना दी।

“जय हिन्द।“वफ़ाई ने सैनिक का अभिवादन किया।

“वफ़ाई, मुझे तुम्हारा पुरुष मित्र बना लो।“पर्वत ने कहा।

“अवश्य। आज से तुम मेरे पुरुष मित्र और मैं तेरी स्त्री मित्र। किन्तु अभी मुझे जाना होगा, लौटकर आने पर खूब रोमांस करेंगे।“ वफ़ाई ने पर्वत को शृंगारिक स्मित दिया।

वफ़ाई जीप की तरफ बढ़ी।

”तुम कई दिनों के पश्चात लौटोगी। हो सकता है कि तुम्हें कोई पुरुष मित्र मिल जाए। यदि कोई मिल जाए तो।... “

“क्या तुम्हें ईर्ष्या हो रही है?” वफ़ाई ने मुड़कर पर्वत की तरफ देखा। वफ़ाई की आँखों में लज्जा थी। उसने अपने अंदर कुछ अनुभव किया। उसके ह्रदय की घाटी में कुछ प्रतिध्वनित हुआ। उसकी नसों में मीठी लहर दौड़ने लगी। उसका ह्रदय कोई अज्ञात सा गीत गाने लगा।

“नहीं तो। मैं कामना करता हूँ कि तुम्हें इस यात्रा में कोई मित्र मिल जाय।“

“धन्यवाद, मित्र।“ वफ़ाई भावुक हो गई।

“मेरा एक काम करोगी?”

“अब क्या चाहिए?”

“सुंदर नीले केसर के फूलों के साथ मेरी कुछ तस्वीरें ले लो।“

वफ़ाई ने पर्वत की मांग मान ली, अनेक तस्वीरें ली। पर्वत के साथ बीते सुंदर क्षणों को अपने अंदर समेटे हुए वफ़ाई यात्रा पर निकल पड़ी।

5

वफ़ाई सावधानी से पहाड़ी मार्ग, जो अभी भी हिम से भरा था, पर जीप चला रही थी। मार्ग घुमावदार और ढलान वाला था। हिम के कारण फिसलन भी थी। फिर भी वह अपने मार्ग पर चलती रही।

पाँच घंटे की यात्रा के पश्चात वह सीधे और साफ मार्ग पर थी। आकाश साफ था, धूप निकल आई थी। हिम कहीं पीछे छूट गया था। हवा में उष्णता थी। उसे यह वातावरण अच्छा लगा।

कोने की एक होटल पर वह रुकी। चाय के साथ थोड़ा कुछ खाना खाया। गरम चाय ने वफ़ाई में ताजगी भर दी, थकान कहीं दूर चली गई।

वफ़ाई ने जीप के दर्पण में स्वयं को देखा, स्वयं को स्मित दिया। उसे अपना ही स्मित पसंद आया। इस यात्रा में वफ़ाई का यह प्रथम स्मित था जो सुंदर था, मनभावन था।

वफ़ाई ने स्वयं को वचन दिया,"इस यात्रा के प्रत्येक मोड पर मैं स्वयं को स्मित देकर प्रसन्न रखूंगी।" वफ़ाई फिर से चल पड़ी।

पाँच दिनों में दो हजार किलो मीटर से भी लंबी यात्रा के पश्चात वफ़ाई कच्छ के द्वार पर आ पहुंची। वफ़ाई ने चाबी घुमाई, जीप शांत हो गई। उस ने घड़ी देखि, वह शाम के 04:07 का समय दिखा रही थी। उस ने गाड़ी की खिड़की का काच खोल दिया। हवा का एक टुकड़ा जीप के अंदर कूद पड़ा। पहाड़ की ठंडी हवा की तुलना में यहाँ की हवा उष्ण थी। वसंत ऋतु यहाँ दस्तक दे चुकी थी। अत: हवा थोड़ी ठंडी भी थी, थोड़ी गरम भी थी। वफ़ाई को यहाँ की हवा भा गई।

वफ़ाई ने उस स्थल पर विहंग द्रष्टि डाली। उसे कहीं भी मरुस्थल नहीं दिखाई दिया।

“तो मरुस्थल है कहाँ?” वफ़ाई ने स्वयम से पूछा।

वह एक छोटा सा गाँव था। वहाँ कुछ लोग घूम रहे थे, छोटी मोटी कुछ दुकाने भी थी। लोग अपने काम में व्यस्त थे। इन दिनों अज्ञात लोगों का आगमन गाँव वालों के लिए सामान्य बात थी अत: वफ़ाई के आगमन पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया।

प्रति वर्ष हजारों लोग यहाँ आते हैं। नवंबर से फरवरी तक यह मरुस्थल सारे विश्व की नजर में रहता है। ठंड, मरुस्थल, स्थानीय संस्कृति आदि को चाहने वाले यहाँ आते रहते हैं। कई प्रसिध्ध हस्तियाँ भी यहाँ आती है। देश के प्रत्येक कोने से और विदेशों से भी यात्री आते रहते हैं।

यात्री यहाँ ‘रण उत्सव’ का भरपूर आनंद उठाते रहते हैं, जिसमें जीवन के अनेक रंग देखे जाते हैं। स्थानीय लोगों के लिए यात्रियों का आगमन कोई विशेष घटना नहीं होती है। अत: किसी ने भी वफ़ाई के आगमन पर ध्यान नहीं दिया।

वफ़ाई ने जीप से नीचे उतकर और हाथ-पैर को झटका। शरीर के अंगों को मरोड़ा। गहरी सांस ली, पानी के कुछ घूंट पिये। वफ़ाई ने वह स्थल और वहाँ के वातावरण में अपने आप को ढालने का प्रयास किया।

दस बारह मिनिट में वफ़ाई ने उस परिवेश से अनुकूलन साध लिया। उसे अच्छा लगा। उसके अधरों पर स्मित था।

“भाई साब, मरुस्थल कहाँ है? वहाँ जाने का मार्ग कौन सा है?’ वफ़ाई ने किसी से पूछा।

“आप को थोड़ा और आगे जाना होगा। उसके बाद एक छावनी आएगी। वहाँ से प्रवेश पत्र लेना होगा। आप को इस दिशा में जाना होगा।“ उसने मरुस्थल के मार्ग की तरफ हाथ खींचा।

“धन्यवाद।“ वफ़ाई मरुस्थल के मार्ग पर जाने लगी।

“एक मिनिट रुको, मरुस्थल जाने से पहले गाड़ी में पेट्रोल की टंकी पूरी भरा लो। यह जो पेट्रोल पंप है वह अंतिम पंप है, आगे नहीं मिलेगा।“ उसने वफ़ाई को सलाह दी।

“ठीक है, फिर से धन्यवाद।“

वफ़ाई ने गाड़ी की टंकी पूरी भरवा ली। दो बड़े डिब्बे में भी पेट्रोल भरवा लिया। वह मरुस्थल की तरफ चल पड़ी।

कुछ मिनिट पश्चात वह सैनिक चौकी पर पहुँच गई जहां से उसे प्रवेश पत्र लेना था। चौकी पर कोई नहीं था। बिना प्रवेश पत्र के ही वह मरुस्थल की तरफ चल पड़ी।

वफ़ाई जीप को धीरे धीरे चला रही थी। वह उस स्थान का निरीक्षण करना चाहती थी, अत: मार्ग के दोनों तरफ देखते देखते जा रही थी। उसने देखा की सभी वाहन मरुस्थल की दिशा से नगर की तरफ आ रहे थे।

“इन लोगों के लिए उत्सव पूरा हो गया होगा।“ वह मन ही मन बोली,” किन्तु यह क्या? सभी वाहन मरुस्थल की विरूध्ध दिशा में जा रहे हैं। मैं ही अकेली मरुस्थल की दिशा में जा रही हूँ। कुछ तो बात है।‘ वफ़ाई फिर भी मरुस्थल की दिशा में जा रही थी।

वह उत्सव के स्थल पर आ पहूँची। वहाँ अस्थाई रूप से बना तंबुओं का एक नगर था। पर वहाँ कोई नहीं था, कुछ भी नहीं था। केवल एक नगर, जो अभी अभी खंडित हुआ था, के अवशेष बचे थे। नगर अपना जीवन खो चुका था।

‘नगर ऐसे ही मर जाते होंगे...’ वफ़ाई ने स्वयं से कहा।

“यह नगर ऐसे क्यों है?” वफ़ाई ने किसी से [उचा।

“मरुस्थल का उत्सव चार दिन पहले ही पूरा हो गया। इस नगर को छोड़कर यात्री जा चुके है। यह तो अस्थाई नगर है। अगले उत्सव तक यहाँ कोई नहीं आएगा।“ उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

“तो पुर्णिमा कब है?” वफ़ाई ने दूसरा प्रश्न किया।

“पुर्णिमा की रात्री चार दिन पहले ही बीत चुकी, अब पचीस दिनों के पश्चात ही पुर्णिमा आएगी।“

“तो वह अदभूत घटना, सूर्यास्त और चंद्रोदय वाली घटना ....” वफ़ाई के शब्द अधूरे रह गए। वह व्यक्ति जा छका था।

वह निराश हो गई।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below